Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848
Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

जनवरी/2022ई०

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

JANUARY-2022

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆9876332272 | Manager: Syed Tufail Ahmad Shahbaz ✆8968184270

Annual Subscription: Rs-210/- | Per Issue: Rs-20/- | Weight: 50-100 gms/Issu e

17-10-2021 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह जयपुर (राजस्थान) के अवसर पर भाषण देते हुए श्री शरीफ़ अहमद फ़ारूक़ी नाज़िम अंसारुल्लाह ज़िल्ला रामगढ़, चूरू, जयपुर एवं हाज़िर अंसार नारे तकबीर बुलंद करते हुए ।

30-11-2021 को नलहटी में आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िल्ला बीरभूम (बंगाल)की अध्यक्षता करते हुए श्री मंसूरुल हक़ नाज़िम अंसारुल्लाह एवं हाज़िर अंसार का एक दृश्य ।

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

17-10-2021 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह जयपुर (राजस्थान) के बाद ली गयी एक ग्रूप फ़ोटो ।

19-10-2021 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िल्ला हैदराबाद के अवसर पर इनाम वितरण करते हुए श्री तनवीर अहमद साहब नायब सदर मज्लिस अंसारुल्लाह दक्षिण भारत ।

श्री ओ ऐ निज़ामुद्दीन साहब नाज़िम मज्लिस अंसारुल्लाह तिरुनलवेली (तमिलनाडु) सरकारी अधिकारियों एवं सियासी नेताओं को इस्लाम अहमदिय्यत का लिटरेचर भेंट करते हुए ।

09-10-2021 को कोंडूर में आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िल्ला वरंगल, (तेलंगाना) के अवसर पर आयोजित बॉल थ्रो मुक़ाबिला का दृश्य ।

09-10-2021 को कोंडूर में आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िल्ला वरंगल, (तेलंगाना) के अवसर पर आयोजित म्यूज़िकल चेयर मुक़ाबिला का दृश्य ।

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم   نحمدہٗ و نصلی علیٰ رسولہ الکریم   وعلیٰ عبدہ المسیح الموعود

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰهِ
سورۃ الصف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 20   जनवरी 2022   **Issue - 1**

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
सय्यद तुफ़ैल अहमद शहबाज़
Ph. +91 84272 63701

कम्पोज़िंग
आसमा तय्यबा

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - व्यर्थ से बचोगे तो सुलह की बुनियाद पढ़ेगी ।	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन शान्तपूर्ण समाज के लिए सुनह अनिवार्य है	6
सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की अन्सारुल्लाह को सुनहरी नसीहतें	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

وَاِنۡ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ اقۡتَتَلُوۡا فَاَصۡلِحُوۡا بَيۡنَهُمَا ۚ فَاِنۡۢ بَغَتۡ اِحۡدٰىهُمَا عَلَى الۡاُخۡرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِىۡ تَبۡغِىۡ حَتّٰى تَفِىۡٓءَ اِلٰٓى اَمۡرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنۡ فَآءَتۡ فَاَصۡلِحُوۡا بَيۡنَهُمَا بِالۡعَدۡلِ وَاَقۡسِطُوۡا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الۡمُقۡسِطِيۡنَ اِنَّمَا الۡمُؤۡمِنُوۡنَ اِخۡوَةٌ فَاَصۡلِحُوۡا بَيۡنَ اَخَوَيۡكُمۡ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ

(सूरः आले इम्रान 5)

अनुवाद -और अगर मोमिनों में से दो जमातें आपस में लड़ पढ़ें तो उनके मध्य सुलह करवाओ। अतः अगर उनमें से एक दूसरी के ख़िलाफ़ उपद्रव करे तो जो ज़्यादती कर रही है इस से लड़ो यहां तक कि वह अल्लाह के फ़ैसला की तरफ़ लौट आए ।अतः अगर वह लौट आए तो इन दोनों के मध्य न्याय से सुलह करवाओ और इन्साफ़ करो।अवश्य अल्लाह इन्साफ़ करने वालों से मुहब्बत करता है। मोमिन तो भाई भाई ही होते हैं। अतः अपने दो भाईयों के मध्य सुलह करवाया करो और अल्लाह का तक़्वा धारण् करो ताकि तुम पर रहम जाए।

दर्सुल हदीस

عَنۡ اُمِّ كُلۡثُوۡمٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنۡهَا قَالَتۡ: سَمِعۡتُ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسلَّمَ يَقُوۡلُ:لَيۡسَ الۡكَذَّابُ الَّذِىۡ يُصۡلِحُ بَيۡنَ النَّاسِ فَيَنۡمِىۡ خَيۡرًا اَوۡ يَقُوۡلُ خَيۡرًا ۔

(अबू दाऊद किताबुल अदब)

अनुवाद - :: हज़रत उम्मे कुलसूम रज़िा वर्णन करती हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि वह व्यक्ति झूटा नहीं कहला सकता जो लोगों के मध्य सुलह सफ़ाई कराने में लगा रहता है और बात को अच्छे अर्थ पहनाता है या भलाई और नेकी की बात कहता है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

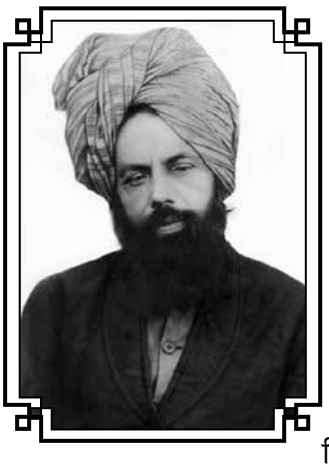

"चरित्र के क्षेत्र में बुराई को त्यागने में तीसरा रूप वह है जिसको अरबी में ''हुद्ना" और ''हौनुन" कहते हैं। अर्थात् दूसरों को अत्याचार के द्वारा शारीरिक कष्ट न पहुंचाना और किसी को हानी पहुँचाने वाला न होना तथा मैत्री भाव से जीवन व्यतीत करना। निस्संदेह मैत्री भाव एक उच्चकोटि का आचरण है जो मानवता के लिए अत्यावश्यक है। इस आचरण के अनुरूप जो प्राकृतिक शक्ति बच्चा में होती है, जो विकसित होकर आचरण की संज्ञा पाता है, वह प्रेम तथा अनुराग है। यह स्पष्ट है कि मनुष्य केवल अपनी जन्मजात अवस्था में अर्थात् उस अवस्था में जबकि मनुष्य में बुद्धिगत विशेष ज्ञान नहीं होता मैत्री के विषय को समझ नहीं सकता और न युद्ध के तत्व को समझ सकता है। अत: उस समय जो एक वृत्ति उस में मेल जोल की पाई जाती है वही मैत्री भाव की जननी है किन्तु चूंकि वह बुद्धि और सोच विचार और विशेश इरादा से अपनाई नहीं जाती इस लिएउसे चरित्र नहीं कहा जा सकता। चरित्र तो तब कहलाएगा जबकि मनुष्य अपनी इच्छा से अपने आप को सरल स्वभाव बनाकर, मैत्री भाव के पवित्राचारण को उचित अवसर पर प्रयोग करे और स्थिति के विरुद्ध प्रयुक्त करने से बचे इस विषय में अल्लाह जल्ला शानोहू यह शिक्षा देता है :-

وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ (الانفال ۱)وَالصُّلْحُ خَيْرٌ (النسآء ۱۲۹)،وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا (الانفال ۶۲)،
وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا (الفرقان ۶۴)،وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا (الفرقان ۷۳)
،اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ (حٰمٓ السجدة ۳۵)

अर्थात् परस्पर मैत्री भाव रखो। मित्रता और सहयोग के पीछे बुहत बड़ा पुण्य और वरदान् छिपा हुआ है। जब वह (विपक्षी) सन्धि करना चाहें और मित्रता के लिए आगे बढ़ें तो तुम भी झुक जाओ। ख़ुदा के नेक बन्दे मैत्री भाव के साथ पृथ्वी पर चलते हैं। यदि वे कोई ऐसी अनुचित बात सुनें जो युद्ध का कारण अथवा उस की भूमिका हो तो महात्माओं की तरह उस की अनदेखी करते हुये चले जाते हैं, और छोटी-छोटी बातों पर लड़ना प्रारम्भ नहीं कर देते। अर्थात् जब तक कोई महान कष्ट न पहुंचे उस समय तक हंगामा करने को अच्छा नहीं समझते। मैत्री भाव के अवसर को पहचानने का यही नियम है कि छोटी-छोटी बातों का विचार न करें और सहिष्णु बनते हुए उन्हें क्षमा कर दें। इस आयत में ''ल़ग्व" का जो शब्द आया है उसके विषय में विदित होना चाहिए कि अरबी भाषा में 'ल़ग्व" उस क्रिया को कहते हैं। जैसे एक व्यक्ति शरारत से ऐसे अपशब्द कहे अथवा दु:ख देने की इच्छा से उस से ऐसी क्रिया प्रकट हो कि वास्तव में उस से कोई हानि नहीं पहुंचती। ऐसे अवसर पर मैत्रीभाव का यह चिन्ह है कि ऐसे बेहूदा दु:ख, कष्ट से अन देखी कर जाएं और महात्माओं की नीति का पालन करें। किन्तु यदि कष्ट केवल ''ल़ग्व" की परिभाषा में सम्मिलित न हो प्रत्युत उस से वास्तव में जान या माल अथवा मान की हानि होती हो तो मैत्रीभाव के आचरण का इस से कोई सम्बन्ध नहीं अपितु यदि ऐसे अपराध को क्षमा किया जाए तो चरित्र की उस विधा का नाम अफ़व अर्थात् क्षमा है। जिसका इन्शअल्लाह तआला इस के पश्चात् वर्णन होगा। इस के बाद अल्लाह का कथन है कि यदि कोई व्यक्ति शरारत से कुछ बकवास करे तो भली प्रकार उसे मैत्रीभाव ढंग से उत्तर दो तब इस विधि से शत्रु मित्र बन जाएगा। सारांश यह कि मैत्रीभाव के द्वारा अनदेखी करने का अवसर केवल उस श्रेणी की बुराई है जिस से कोई वास्तविक नुकसान न पहुँचा हो जो केवल शत्रू की बकवास ही हो।

(इस्लामी उसूल की फलासफी, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 10 पृष्ठ 348,349)

सम्पादकीय

व्यर्थ से बचोगे तो सुलह की बुनियाद पड़ेगी

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने हिज्री शमसी कैलण्डर का आरम्भ फ़रमाया। जिसमें सुलह हुदैबिया की घटना को समक्ष रखते हुए जनवरी का नाम"सुलह" रखा है। जिससे आपस में सुलह तथा सफ़ाई के साथ रहने और समाज में भी सुलह करवाने की तरफ़ हमें ध्यान दिलाया गया है।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम की शरीयत को इन्सानी फ़ित्रत के अनुसार नाज़िल किया है। जिसमें इन्सान को प्रत्येक दृष्टिन से उच्च आचरण की शिक्षा दी गई है। फ़ित्री तौर पर हर इन्सान का अपना अलग मिज़ाज है। यह तो स्पष्ट है कि मतभेद वहीं होगा जहां कोई क़रीबी सम्बन्ध हो। जिससे कुछ लेना देना ही नहीं इस से मतभेद कैसा? इकट्ठे रहन सहन, लेन-देन और आपसी मामलों में प्राय समय ग़लत-फ़हमियाँ पैदा होती हैं और यह ग़लत-फ़हमियाँ बढ़ते बढ़ते नफ़रत तथा शत्रुता, सम्बन्ध विच्छेद, दुश्मनी और लड़ाई झगड़े, जंग तथा झगड़ों, खूनखराबे और क़तल तक जा पहुँचती हैं। नतीजा यह निकलता है कि समाज में फ़साद शुरू हो जाता है, इन्सानी निज़ाम ज़िंदगी तबाह हो कर रह जाता है, यहां तक कि ख़ानदानों के ख़ानदान उजड़ जाते हैं। इन सारे फ़ित्नों से बचाओ के लिए इस्लाम के निज़ाम अख़लाक़ में आपसी सुलह तथा सफ़ाई पर बहुत ज़ोर दिया गया है। चूँकि सुलह के द्वारा ही आराम की ज़िंदगी को यक़ीनी बना कर जान तथा माल के नुक़्सानों से बचा जा सकता है। इसी लिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन-करीम में इरशाद फरमाया है।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ

(अलहुजरात 11) अर्थात मोमिन तो भाई भाई ही होते हैं। अत: अपने दो भाईयों के मध्य सुलह करवाया करो और अल्लाह का तक़्वा धारण करो ताकि तुम पर रहम किया जाए।

हज़रत आइशा रज़ी अल्लाह अन्हा वर्णन करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया اَبْغَضُ الرِّجَالِ اِلَى اللّٰهِ الْأَلَدُّ الْخَصِمُ कि अल्लाह के नज़दीक लोगों में सबसे ज़्यादा नापसंदीदा वह शख़्स है जो सबसे ज़्यादा झगड़ालू हो

(बुख़ारी किताबुल तफ़सीर)

हज़रतअक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"मैत्री भाव के अवसर को पहचानने का यही नियम है कि छोटी-छोटी बातों का विचार न करें और सहिष्णु बनते हुए उन्हें क्षमा कर दें। इस आयत (फुर्क़ान64) में ''ल़ग्व" का जो शब्द आया है उसके विषय में विदित होना चाहिए कि अरबी भाषा में 'ल़ग्वङ्क उस क्रिया को कहते हैं। जैसे एक व्यक्ति शरारत से ऐसे अपशब्द कहे अथवा दु:ख देने की इच्छा से उस से ऐसी क्रिया प्रकट हो कि वास्तव में उस से कोई हानि नहीं पहुंचती। ऐसे अवसर पर मैत्रीभाव का यह चिन्ह है कि ऐसे बेहूदा दु:ख, कष्ट से अन देखी कर जाएं और महात्माओं की नीति का पालन करें।

(इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी। रूहानी ख़ज़ायन,भाग 10 पृष्ठ 348)

दोनों पक्ष जब कठोर बात करने में उतरते हैं तो

बात बिगड़ जाती है

रंज की जब गुफ़्तगु होने लगी

आपसे तुम,तुम से होने लगी

(नवाब मिर्ज़ा ख़ान दाग़ देहलवी)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

" लग़ो से परहेज़ करोगे तो सुलह की बुनियाद पड़ेगी। क्योंकि ये लग़ जो हैं, ये गुनाह की बातें जो हैं यही बातें हैं जो सुलह से दूर करती हैं और लड़ाईयों के क़रीब लाती हैं... अत: हमें चाहिए कि हम सब उन नसीहतों पर अनुकरण करने वाले हों। ये झगड़े, लड़ाईयां और फ़साद व्यक्तिगत हों, गिरोह के हों या देश के हों, उनकी बुनियादी वजह यही है कि ख़ुदा के सिवा इस दुनिया की भौतिक चीज़ों को ख़ुदा ने बनाया हुआ है अत: आज हर अहमदी को यह भी कोशिश करनी चाहिए, यह भी वादा करना चाहिए कि दुनिया में सुलह की बुनियाद डालने के लिए आपस में सुलह को रिवाज देने के लिए इन दुनियावी ख़ुदाओं को भी तोड़ना होगा और इस में हमारी बक़ा है।"

(ख़ुत्बा जुमा 7 सितम्बर 2004 ई)

अल्लाह तआला हमें इन हिदायतों पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

शान्तपूर्ण समाज के लिए सुलह अनिवार्य है

क़ुरआन करीम के विभिन्न स्थानों पर सुलह के महत्व तथा आवश्कता, उस की ज़रूरत और ख़ानदानी तथा मुआशरती निज़ाम ज़िंदगी में इस के किरदार पर रोशनी डाली गई है। उसे"ख़ैर" के शब्द से बताया गया है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है।وَالصُّلْحُ خَيْرٌ (अन्निसा 129) सुलह को ज़रूरी क़रार देते हुए फ़रमायाوَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ (अल-अनफ़ाल 1)अर्थात आपस में सुलह धारण करो ऐसे लोगों की प्रशंसा की गई है जो सुलह पसंद करते हों।

हज़रत सहल बिन सअद रज़ी अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि क़बा वाले किसी मामले पर आपस में झगड़ पड़े यहां तक कि हाथा पाई और एक दूसरे पर पत्थर फेंकने की नौबत आ गई। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस की सूचना की गई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम को फ़रमाया:हमारे साथ चलो हम उनके दरमयान "सुलह सफ़ाई कराते हैं।"

(सही बुख़ारी, हदीस नम्बर 2693)

सुलह करवाने से बारे में कुछ बुनियादी बातों का ख़्याल रखना ज़रूरी है। सुलह कराने वाले को चाहिए कि वह नेक नीयत के साथ सुलह कराए। शौहरत, दिखावे और दुनियावी हितों से ऊपर उठ कर ख़ालिस अल्लाह की रज़ा के लिए यह भलाई का कर्म करे। सुलह के लिए ऐसे समय का च्यन करे जब दोनों पक्ष सुलह के लिए रज़ामंद हो सकें और उनका ग़ुस्सा इत्यादि ठंडा हो जाए। सुलह कराते वक़्त नर्म शब्दों और धीमा लहजा धारण करे और दोनों पक्षों को उनके उत्तम गुणों और ख़ानदानी शराफ़त याद दिलाए ताकि वे "सुलह सफ़ाई" के लिए शीघ्र तैयार हों।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"ख़ुदा की इच्छा है कि तुम्हारे जीवन का पूर्ण काया-कल्प हो। वह तुमसे एक मौत माँगता है जिसके पश्चात वह तुम्हें जीवन प्रदान करेगा। तुम परस्पर शीघ्र सुलह करो, अपने भाइयों के दोषों को क्षमा करो क्योंकि उद्दण्ड है वह मनुष्य जो अपने भाई से समझौता करने के लिए तैयार नहीं। वह काटा जाएगा क्योंकि वह एकता को खंडित करता है। तुम हर पहलू से अहं को त्याग दो, आपसी द्वेष मिटा दो, सच्चे होकर झूठे की भांति दीनता का अनुसरण करो ताकि तुम्हें क्षमा किया जा सके। अंहकार में मत बढ़ो कि जिस द्वार पर तुम्हें बुलाया गया है उसमें एक अहंकारी मनुष्य प्रवेश नहीं कर सकता। दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जो इन बातों को नहीं समझता जो ख़ुदा के मुख से निकलीं और मैंने उनका वर्णन किया। यदि तुम चाहते हो कि आकाश पर ख़ुदा तुम से प्रसन्न हो तो तुम परस्पर इस प्रकार एक हो जाओ जैसे एक पेट में दो भाई। तुम में श्रेष्ठतम वही है जो अपने भाई के दोषों और भूलों को अधिक से अधिक क्षमा करता है, और दुर्भाग्यशाली है वह जो हठधर्मी से काम लेते हुए उसे क्षमा नहीं करता। ऐसे व्यक्ति का मुझ से कोई

नाता नहीं।

(किश्ती नूह। रूहानी ख़ज़ाइन भाग 19 पृष्ठ12)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल-अज़ीज़ फ़रमाते हैं।

" आजकल की दुनिया में जहां हरवक़त और हर जगह फ़ित्ना तथा फ़साद की हालत छाई है हम जो अपने आपको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर एक किला में आया हुआ समझते हैं और इस बात पर शुक्र करते हैं कि अल्लाह तआला ने हमें दुनिया की उमूमी फ़साद की हालत से महफ़ूज़ रखा हुआ है हक़ीक़त में हम उस वक़्त महफ़ूज़ हो सकते हैं जब हर वक़त हम यह एहसास रखें कि अपने जायज़ मामलों में भी दूसरों से मामले पड़ने पर नर्मी का व्यवहार रखना है और सुलह की बुनियाद डालनी है.... सृष्टि से हमदर्दी और सुलह एक ऐसा गुण है जिसको अपनाने की हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार-बार नसीहत फ़रमाई है। अत: हर अहमदी को उस पर बहुत बहुत ध्यान देना चाहिए।"

(ख़ुतबा जुम्अ 18 अगस्त 2017 ई)

अमन के साथ रहो, फ़ित्नों में हिस्सा मत लो
बाइस फ़िक्र परेशानी हुक्काम न हो

(कलाम-ए-महमूद)

अल्लाह तआला हम समस्त अन्सार भाईयों को आपस में प्यार तथा भाईचारा से रहने और समाज में में सुलह करवाने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए

अताउल मुजीब लोन

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Maqbool Ahmed
Cell : 9949310679
: 9949209561

Plant Medicine

Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles

H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

Mob: 9008510546

Akmal Tailor

Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030

زبیر احمد شحنہ

ZUBER

Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की अन्सारुल्लाह को सुनहरी नसीहतें

ख़िताब सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह यू के 2021 ई की रोशनी में)

मज्लिस अन्सारुल्लाह के अहद को हमें हमेशा सम्मुख रखने की ज़रूरत है जिसमें ख़ुदा तआला की तौहीद और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रिसालत का इक़रार करने के बाद हम यह वादा करते हैं कि

"मैं इक़रार करता हूँ कि इस्लाम अहमदियत की मज़बूती और इशाअत और निज़ामे ख़िलाफ़त की हिफ़ाज़त के लिए इंशा-ए-अल्लाह तआला आख़िर दम तक जद्द-ओ-जहद करता रहूँगा और इस के लिए बड़ी से बड़ी क़ुर्बानी पेश करने के लिए हमेशा तैयार रहूँगा नीज़ मैं अपनी औलाद को भी हमेशा ख़िलाफ़त से वाबस्ता रहने की तलक़ीन करता रहूँगा

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल-अज़ीज़ अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल-अज़ीज़ ने 12 सितम्बर 2021 ई को मज्लिस अन्सारुल्लाह यू के के सालाना इज्तिमा के सम्पान इज्लास में ईमान वर्धक ख़िताब फ़रमाया और सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पवित्र उपदेशों की रोशनी में अन्सार को सुनहरी नसीहतें फ़रमाते हुए हक़ीक़ी अर्थों में अन्सारुल्लाह बनने की नसीहत फ़रमाई। बेशक यह सारा ख़िताब ही इन आशाओं का आईनादार है जो हमारे आक़ा अय्यदहुल्लाह तआला ने हम अन्सार से बाँधी हैं ताकि हम अपने अहद के अनुसार ख़िलाफ़त अहमदिया के सहायक बन कर धर्म की सेवा का सौभाग्य प्राप्त कर सकें। इस ईमान वर्धक ख़िताब की आवाज़ मज्लिस अन्सारुल्लाह के इजलासों और अन्य प्रोग्रामों में सुनाई देती रहेगी। परन्तु नीचे में इस प्रमुख ख़िताब में से कुछ बिन्दु प्रस्तुत कर रहा हैं जिन्हें आदरणीय डाक्टर सर इफ़्तिख़ार अहमद अय्याज़ साहिब ने संकलन करके प्रकाशन के लिए भिजवाया है।

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल-अज़ीज़ ने फ़रमाया

(1) आप जो अपने आपको अन्सारुल्लाह कहते हैं इस बात को हर वक़त सामने रखें कि अन्सारुल्लाह तभी कहला सकते हैं जब इस ज़माने के इमाम अल्लाह तआला के भेजे हुए हज़रत मसीह मौऊद और महदी माहूद की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए सिर्फ नाम के अन्सारुल्लाह न हों बल्कि इस भावना को समझते हुए नहनु अन्सारुल्लाह का नारा लगाऐं।

(2) अन्सारुल्लाह की उम्र तो ऐसी उम्र है कि जिसमें अगली ज़िन्दगी का सफ़र ज़्यादा स्पष्ट नज़र आता है और आना चाहिए। जितनी उम्र बढ़ती है मौत उतनी ही क़रीब होती जाती है। इस में हमारी प्राथमिकताएं क्या होनी चाहिऐं फिर मैं कहूँगा इस का अंदाज़ा हम ख़ुद ही सोच कर लगा सकते हैं। हमें तक़्वा धारण करना चाहिए।

(3) अल्लाह तआला ने इस ज़माने में धर्म के प्रचार प्रसार की सम्पूर्णता का काम हज़रत मसीह

मौऊद अलैहि अलसलो वस्सलाम के सपुर्द किया है अर्थात तब्लीग़ इस्लाम का महान काम आपके सपुर्द किया गया है और यही काम करने की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत के लोगों से आशा की है।

(4) अन्सारुल्लाह को सबसे बढ़कर इस्लाम की तब्लीग़ का महान काम करने का सम्बोधन अपने आपको समझना चाहिए।

(5) अत: हमें अपने बैअत के अह्द को निभाने के लिए अपने अन्सारुल्लाह के अह्द को निभाने के लिए इस महान काम में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मददगार बनने के लिए अपनी समस्त सलाहियतों के साथ इस महान काम को सरअंजाम देने के लिए मैदान में उतरना होगा तभी हम हक़ीक़ी अन्सारुल्लाह कहला सकते हैं।

(6) केवल मुँह से दावा कर देना कि हम अन्सारुल्लाह हैं काफ़ी नहीं है। इस के लिए हमें अपनी समीक्षा भी करनी होगी।

(7) धर्म का पैग़ाम दुनिया के कोने कोने में फैलाना कोई आसान काम नहीं है। इस के लिए हमें अल्लाह तआला से सम्बन्ध करने में भी तरक़्क़ी करनी होगी और तक़्वा में भी तरक़्क़ी करनी होगी।

(8) हमें अपनी समीक्षा करने की ज़रूरत है कि क्या हमने अपनी हालतों में वह तबदीली पैदा कर ली है या उस तबदीली के पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए ज़रूरी है। अगर नहीं तो हमारा नहनु अन्सारुल्लाह का नारा व्यर्थ और निराधार है।

(9) हमें बहुत गहराई में जा कर अपनी समीक्षा करने की ज़रूरत है कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मददगार किस तरह बन सकते हैं? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमसे क्या चाहते हैं? हमें इस स्तर को प्राप्त करने के लिए अपने अन्दुरूने को घंगालना होगा, अपने अंदर झांकना होगा

(10) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक अहमदी का जो स्तर बयान फ़रमाते हैं, अन्सारुल्लाह कहलाने वालों का क्या स्तर होना चाहिए ख़ुद ही हमें अपनी समीक्षा करने की ज़रूरत है।

(11) जब ख़ुदा तआला का इरादा इन्सानी सृष्टि से सिर्फ इबादत है तो मोमिन की शान नहीं कि किसी दूसरी चीज़ को ऐन मक़सूद बना ले। हुक़ूक़ नफ़्स तो जायज़ हैं मगर नफ़्स की बे एतिदालीयाँ जायज़ नहीं।

(12) अगर ज़िन्दगी के मक़सद को हम समझ गए तो हम हक़ीक़ी अन्सार में शामिल हो जाऐंगे क्योंकि यही स्तर हासिल करने वाले वे लोग हैं जो नबी के हक़ीक़ी मददगार बन सकते हैं।

(13) हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इस सिलसिला से ख़ुदा तआला ने यही चाहा है और उसने मुझ पर ज़ाहिर किया है कि तक़्वा कम हो गया है। अब अल्लाह तआला ने यह इरादा किया है कि वह दुनिया को तक़्वा और पवित्रता की ज़िंदगी का नमूना दिखाए। इसी उद्देश्य के लिए उसने यह सिलसिला क़ायम किया है। वह पवित्रता चाहता है और एक पाक जमाअत बनाना उस की इच्छा है।

अत: इस बात के बाद हमें अपने जायज़े लेने

चाहिऐं कि हमारी हक़ीक़त में पवित्रता हो गई है। क्या हमने अपनी ज़िंदगीयों को इतना पवित्र कर लिया है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमसे चाहते हैं।

(14) तब्लीग़ के लिए ये दो बातें हमेशा याद रखनी चाहिऐं कि अपने कर्म और शिक्षा में समानता पैदा करना और दूसरे सब्र से काम लेते हुए स्थायी मिज़ाज से और बर्दाश्त से तब्लीग़ करते चले जाना है। अत: हमें इस दृष्टि से भी अपनी समीक्षा करनी चाहिए और तब्लीग़ के काम को आगे बढ़ाना चाहिए।

(15) अन्सारुल्लाह क़ुरआन-ए-करीम के हुक्मों की तलाश करें। जो मना किए गए काम और करने योग्य काम हैं उनको देखें। जो न करने वाली बातें हैं उनसे रुकीं। जो करने वाली बातें हैं उनको इख़्तियार करें। अपनी हालतों को बेहतर बनाएँ। तभी अन्सारुल्लाह हक़ीक़ी बैअत का हक़ अदा कर सकते हैं और तभी हम हक़ीक़ी रंग में अन्सारुल्लाह बन के यह पैग़ाम दुनिया को पहुंचा सकते हैं और दुनिया को सीधे रस्ते पर चला सकते हैं

(16) अन्सारुल्लाह को हक़ीक़ी अन्सारुल्लाह बनने के लिए बहुत ग़ौर करने की ज़रूरत है। अत: अल्लाह तआला की मुहब्बत हमें अपने दिल में पैदा करने की बहुत कोशिश करनी चाहिए कि हमारे कर्म भी इस वक़्त हक़ीक़ी कर्म बनेंगे जब हम ख़ुदा तआला की मुहब्बत के कारण से नेकियां करने वाले होने की कोशिश करेंगे।

(17) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह भी फ़रमाया है कि हमारी कामयाबी दुआओं से ही होनी है। अत: जब हम अपनी व्यावहारिक हालतों की तबदीली के साथ दुआओं और इबादतों के उच्च स्तर प्राप्त करने की कोशिश करेंगे तो तभी हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हक़ीक़ी अन्सार में गिने जा सकते हैं।

(18) हम अन्सार अपनी अगली नस्लों के ज़हनों में सवाल पैदा करने के स्थान पर उनके सुधार और जमाअत से जोड़ने का माध्यम बन सकते हैं। अल्लाह तआला हमें उस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

(19) अपने ख़िताब के अन्त में सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दुआ करवाई और दुआ से पहले फ़रमाया कि इस वक़्त मैं जिस जगह से बोल रहा हूँ, ख़िताब कर रहा हूँ यह एम टी ए इस्लामाबाद का नया स्टूडियो है और आज पहली बार यहां से यह प्रोग्राम जारी हो रहा है मानो कि अन्सारुल्लाह के इस इज्तिमा के साथ इस का उद्घाटन भी हो गया। अल्लाह तआला इस को भी इस्लाम का पैग़ाम,धर्म का पैग़ाम पहुंचाने का माध्यम बनाए और पहले से बढ़कर एम टी ए के माध्यम से दुनिया में इस्लाम का हक़ीक़ी पैग़ाम पहुंच सके।

अल्लाह तआला हम सब अन्सार को इन बरकतों तथा नसीहतों को सम्मुख रखने और उन पर अनुकरण करने तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए ताकि हम हक़ीक़ी अर्थों में अन्सारुल्लाह में शामिल हो कर अपने अह्द के अनुसार मक़बूल कर्म करने वाले हों। आमीन

(उद्धरित " अन्सारुद्दीन नवम्बर-दिसम्बर 2021 ई)